Review Of Research
Vol. 4 | Issue. 1 | Oct. 2014
Impact Factor : 2.1002 (UIF)
ISSN:-2249-894X
Available online at www.lbp.world

ORIGINAL ARTICLE

देवनागरी लिपि की विशेषताएँ

डॉ. अर्चना शिवाजीराव कांबळे
हिंदी विभाग, श्री शिवाजी महाविद्यालय, बार्शी

प्रस्तावना :

भाषा अपने मूल रूप में ध्वनि पर आधारित है। ध्वनियाँ ही उच्चारित होती है और सूनी जाती है। इस प्रकार भाषा की काल और स्थान की दृष्टि से सीमा है। वह केवल तभी सुनी जा सकती है। जब बोली जाती है तथा वही तक सुनी जा सकती है जहाँ तक आवाज जा सकती है। काल और स्थान की इस सीमा के बंधन से भाषा को निकालने के लिए लिपि का जन्म हुआ। निश्चिय ही भाषा के विकसित हो जाने के बाद ही लिपि का विकास हुआ होगा।

लिपि और भाषा का संबंध यह है कि अपने मूल रूप में ध्वनियों पर आधारित है, लिपि में उन ध्वनियों (या कुछ भाषाओं में शब्दों को) को रेखाओं द्वारा व्यक्त करते हैं। अर्थात दोनों में माध्यम का अंतर हैं।

लिपि की उत्पत्ति–

भाषा की उत्पत्ति की भाँति ही लिपि की उत्पत्ति के विषय में भी पुराने लोगों का विचार था कि ईश्वर या किसी देवता द्वारा यह कार्य संपन्न हुआ। भारतीय पंडित ब्राह्मी लिपि को ब्रम्हा की बनाई मानते है और इसके लिए उनके पास सबसे बड़ा प्रमाण यह है कि लिपि का नाम "ब्राम्ही" है। भाषा की भाँति ही लिपि के संबंध में भी अंधाविश्वास मात्र हैं। तथ्य यह है कि मनुष्य ने अपनी आवश्यकतानुसार लिपि को स्वयं जन्म दिया। आरंभ में मनुष्य ने इस दिशा में जो कुछ भी किया, वह इस दृष्टि से नहीं किया गया था कि उससे लिपि विकसित हो, बल्कि जादू–टोने के लिए कुछ रेखाएँ खींची गई या धार्मिक दृष्टि से किसी देवता का प्रतीक या चित्र बनाया गया या पहचान के लिए अपने–अपने घड़े या अन्य चीजों पर कुछ चिन्ह् बनाए गए, ताकि बहुतों की ये चीजें जब एक स्थान पर रखी जाएँ तो लोग सरलता से अपनी चीजें पहचान सकें, या सुंदरता के लिए कंदराओ की दीवालों पर आसपास के जीव जन्तुओं या वनस्पतिओं को देखकर उनके टेढ़े–मेढ़े चित्र बनाए गए। या स्मरण के लिए किसी रस्सी या पेड़ की छाल आदि में गाँठे लगाई गई और बाद में इन्हीं साधनों का प्रयोग अपने विचारों की अभिव्यक्ति के लिए किया गया और वह धीरे–धीरे विकसित होकर लिपि बन गई।

लिपि का विकास–

आज तक लिपि के संबंध में जो प्राचीनतम सामग्री उपलब्ध है उस आधार पर कहा जा सकता है कि 4000 ई.पू.के मध्य तक लेखन की किसी भी व्यवस्थित पद्धति का कहीं भी विकास नहीं हुआ था और इस प्रकार के प्राचीनतम अव्यवास्थित प्रयास 10,000 इ.पू. से भी कुछ पूर्व किए गए थे। इस प्रकार इन्हीं दोनों के बीच अर्थात् 10,000 ई.पू. और 4,000 ई.पू.के बीच लगभग 6,000 वर्षो में धीरे–धीरे लिपि का प्रारंभिक विकास होता रहा।

लिपि के विकास– क्रम में आने वाली विभिन्न प्रकार की लिपियाँ–

लिपि के विकास क्रम में निम्न प्रकार की लिपियाँ मिलती है–

1. चित्रलिपि।
2. सूत्रलिपि।
3. प्रतिकात्मक लिपि।
4. भाव–ध्वनिमूलक लिपि।
5. ध्वनिमूलक लिपि।

देवनागरी लिपि–

आधुनिक लिपियों में प्रसार और प्राचीनता की दृष्टि से सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण नागरी या देवनागरी है। यह ब्राह्मी की सच्ची उत्तराधिकारिणी लिपि है।

आधुनिक नागरी प्राचीन नागरी से 12 वीं शती ई.में विकसित हुई है। इसके बहुत से अक्षरों का वर्तमान रूप 13 वीं शती ई.तक निर्मित हो चूका था ओर शेष अक्षर भी अपनी आधुनिक आकृति ग्रहण कर चूक थे।

देवनागरी लिपि का सर्वप्रथम प्रयोग गुजरात के नरेश जय भट्ट (7 वीं – 8 वीं शती ई.) के एक शिलालेख में हुआ है। 8 वीं शती में राष्ट्रकूट नरेशों ने भी इसका प्रयोग किया है। 9 वीं शती में बडौदा नरेश ध्रुवराज के राज्यादेशों में भी देवनागरी प्रचलित थी। उत्तरप्रदेश, बिहार, मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र, राज्यस्थान, गुजरात आदि प्रान्तो से उपलब्ध शिलालेख, ताम्रलेख, हस्तलेख आदि देवनागरी के भारत के सर्वाधिक क्षेत्रों में प्रचार की सूचना देते हैं। ईसा की सत्रहवी शती तक यह लिपि गुजरात में प्रचलित थी। महाराष्ट्र में इसे "बाल–बोध" की संज्ञा मिली थी। आठवीं शती से 18 वीं शती तक देवनागरी मेवाड़ के गुहिलवंशी, मारवाड के परिहार और गुजरात के के सोलंकी राजाओं में प्रचलित थी। इससे देवनागरी की प्रयोग की व्यापकता की सूचना मिलती है। किन्तू आरंभ से अब तक देवनागरी लिपि के अक्षरों के विकास की रूपरेखा स्पष्ट नही हो पाई है। दूसरे शब्दों में देवनागरी लिपि के प्रयोग का इतिहास जितना स्पष्ट और क्रमबध्द है उसके अक्षरों के विकास की रूपरेखा उतनी ही धूँधली फिर भी उसके विकास को क्रमबध्द करने की कोशिश विद्वानों ने की है।

देवनागरी लिपि की महत्त्वपूर्ण वि□ोशताएँ– देवनागरी लिपि की महत्त्वपूर्ण विशेषताएँ इस प्रकार है।

1. इनमे ध्वनि प्रतिकों अथवा अक्षरों को अत्यन्त वैज्ञानिक ढंग से क्रमबध्द किया गया है। सर्वप्रथम ध्वनि प्रतीक स्वर और व्यंजन इन दो विभागों में विभक्त है। व्यंजनों के कंठ्य आदि सात समूह है। तीन संयुक्त व्यंजन है क्ष, त्र, ज्ञ तथा ड़, ढ़ आदि कुछ अन्य आवश्यक व्यंजन भी इसमें साम्मीलित किए गए है।
2. इसमें प्रत्येक ध्वनि को लिए अलग लिपि चिन्ह् है। वह इसकी सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण विशेषता है। फारसी लिपि में स के लिए सनि, स्वाद आदि का और रोमन में क के लिए सी के क्यू का प्रयोग होता है किन्तू नागरी में इस प्रकार की अनियमितता नहीं है।

3. अंग्रेजी की तरह इसमें लिखने और मुद्रण के लिए अलग–अलग दो छोटे–बड़े रूप भी नहीं है और न एक ही लिपि चिन्ह् से दो ध्वनियाँ ही अंकित होती है। जैसे–अंग्रेजी में यू से अ और उ का अंकन बट But और पुट Put
4. स्वरों में प्राय: सभी के (ए–ओ को छोड़कर) ऱ्हस्व एवं दीर्घ रूप के लिए अलग–अलग लिपि चिन्ह् है।
5. लिपि चिन्हों के प्रयुक्त रूप और उच्चरित रूप में समानता है। दूसरे शब्दों में इसमें लिपि के चिन्हों की लिखावट उच्चरण के अनुकूल है।
6. इसमें केवल उच्चारित ध्वनियाँ ही अंकित की जाती है। अनुच्चरित ध्वनियों के लिए इसमें कोई स्थान नहीं है। जबकि अंग्रेजी में अनुच्चरित ध्वनियों का भी अंकन होता है। जैसे–वाक् walk में अनुच्चरित ध्वनि ल L का अंकन।
7. स्पर्श व्यंजन ध्वनियों में प्रत्येक अघोष के लिए पृथक सघोष ध्वनि चिन्ह् और प्रत्येक अल्पप्राण के लिए पृथक महाप्राण ध्वनि चिन्ह् भी है। जैसे क अल्पप्राण के लिए ख महाप्राण ध्वनि चिन्ह आदि। जबकि रोमन में महाप्राण ध्वनियों के लिए अलग लिपि चिन्हों का अभाव है। अल्पप्राण ध्वनि में एच H जोड़कर महाप्राण Kha का निर्माण आदि।
8. सभी वर्ग की अनुनासिक ध्वनियों के लिए भी अलग–अलग लिपि चिन्ह् है। जैसे क वर्ग के लिए ड. च वर्ग के लि ञ, ट वर्ग के लिए ण, त वर्ग के लिए न और प वर्ग के लिए म।
9. इसमें अ, आ को छोड़कर शेष सभी स्वरों को ऱ्हस्व ए, दीर्घ मात्राएँ विद्यमान है और व्यंजनों के साथ उनका स्थान नियत है एवं प्रयोग सरल है।
10. इसके अक्षर अत्यंत कलात्मक सुंदर एवं सुगढ़ित है। लिखने में अपेक्षाकृत स्थान कम घेरते है।
11. यह अत्यन्त व्यावहारिक एवं गत्यात्मक लिपि है। आवश्यकतानुसार समय–समय से इसमें अनेक ध्वनि चिन्हों् को समाविष्ट किया गया है। जैसे फारसी क, ख़, ग़, ज़, फ अंग्रेजी ऑ, मराठी अ आदि लिपि चिन्ह् एवं अंग्रजी के कामा, आदि अनेक विराम चिन्ह्।

निष्कर्ष

1. लिपि की उत्पत्ति दैवी नहीं है। यह मनुष्यद्वारा अविष्कृत है। मनुष्य की जिज्ञासू भूलें और कलात्मक अभिरूची ने इसे क्रमश विकसित किया है। यद्यपि इसके विकास का इतिहास संदिग्ध है किन्तु इसके विकास की रूपरेखा स्पष्ट है।
2. देवनागरी प्रचार और प्रसार की दृष्टि से आधुनिक लिपियों में प्रमुख है। यह भारत की राष्ट्र लिपि है।
3. ध्वनि संकेतों का वैज्ञानिक क्रम, उच्चारण के अनुकूल लिखावट, भूल एवं प्रयुक्त रूप में एकरूपता आदि इसकी प्रमुख विशेषताएँ है। जो इसे विश्व लिपियों की रागेश्वरी सिद्ध करती है, फिर भी यह सर्वथा दोष मुक्त लिपि नहीं है। अत: इसमें अपेक्षित सुधार की जरूरत है।

संदर्भ–

1. भाषा विज्ञान– डॉ. भोलानाथ तिवारी
2. हिंदी भाषा नागरी लिपि और अंक– डॉ. जयंत्रीप्रसाद